पाठ्यपुस्तक : क्षितिज भाग-1

(काव्य-खंड)

साखियाँ एवं सबद (कबीर)

पाठ का परिचय

कबीर ने सांसारिकता और भक्ति-संबंधी जो अनुभव प्राप्त किए, जिन बातों के वे स्वयं साक्षी रहे हैं, उनको उन्होंने अपने जिस छंद में व्यक्त किया है, उन्हें ही साखी कहा गया है। उन्होंने अपने ये अनुभव दोहा छंद में व्यक्त किए हैं। इसलिए उनके दोहे साखी के नाम से जाने जाते हैं। भक्ति की रीति और सिद्धांतों आदि को उन्होंने सबद (पद) में व्यक्त किया है। प्रस्तुत पाठ में **'साखियाँ'** शीर्षक के अंतर्गत उनके सात दोहे और **'सबद'** के अंतर्गत दो पद संकलित हैं। इनमें दूसरे पद से परीक्षा में प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे। संकलित साखियों में प्रेम के महत्त्व, संत के लक्षण, ज्ञान की महिमा और बाह्याडंबरों का विरोध किया गया है। संकलित पदों में बाह्याडंबरों के विरोध के साथ अपने अंतर्मन में ईश्वर को खोजने और ज्ञान की सहायता से अपनी दुर्बलताओं से मुक्त होने का वर्णन किया गया है।

कविताओं का भावार्थ

साखियाँ

1. **मानसरोवर सुभर·····अनत न जाहिं।।**

भावार्थ—जल से लबालब भरे मनरूपी मानसरोवर में साधकरूपी हंस क्रीडा कर रहे हैं। वे मुक्त भाव से मानसरोवर के जल में से मुक्तिरूपी मोती चुग रहे हैं। उन्हें जल-क्रीडा में इतना आनंद आ रहा है कि वे अब इस स्थान को छोड़कर कहीं और नहीं जाएँगे।

प्रतीकार्थ यह है कि प्रभु-भक्ति में लीन होकर भक्तों को परमानंद प्राप्त होता है। वे सांसारिक मोह-लोभ से मुक्त होकर मुक्ति का आनंद ले रहे हैं। अब वे इसे छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते।

2. **प्रेमी ढूँढ़त·····विष अमृत होइ।।**

भावार्थ—कबीर कहते हैं—मैं (कोई भक्त) किसी सच्चे प्रभु-प्रेमी (भक्त) को ढूँढ़ने निकला हूँ, परंतु बहुत प्रयास के बाद भी प्रभु के सच्चे प्रेमी से मेरी भेंट न हो सकी। यदि मुझ जैसे सच्चे प्रभु-प्रेमी को कोई सच्चा प्रभु-प्रेमी मिल जाए तो संसार का पाप, वासना, मलिनतारूपी समस्त विष पुण्य, सद्भावना, भक्तिरूपी अमृत में परिवर्तित हो जाए।

3. **हस्ती चढ़िए·····दे झख मारि।।**

भावार्थ—कबीर साधकों को संबोधित करते हुए कहते हैं—हे साधको! तुम ज्ञानरूपी हाथी पर सहज-समाधिरूपी आसन बिछाकर निश्चितता से चढ़े चलो। यह संसार तो उस कुत्ते के समान है, जो हाथी को चलता देख व्यर्थ ही भौंकता रहता है। उससे तुम्हारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। आशय यह है कि प्रभु-प्रेमी या साधक को दुनिया की निंदा की चिंता किए बिना अपनी साधना के पथ पर निर्भय होकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। कुत्तों के भौंकने से हाथी का कभी कुछ नहीं बिगड़ा है अर्थात् दुनिया वालों की निंदा और उपहास से तुम अप्रभावित ही रहो और साधना-पथ पर आगे बढ़ते चलो।

4. **पखापखी के कारनै·····संत सुजान।।**

भावार्थ—कबीर कहते हैं—आज सारा संसार ईश्वर के निर्गुण-सगुण स्वरूप अथवा उसके अस्तित्व-अनस्तित्व के पक्ष-विपक्ष के विवाद में पड़कर उसको भूला हुआ है अर्थात् लोग ईश्वर के स्वरूप आदि के संबंध में तर्क-वितर्क के चक्करों में पड़कर ईश्वर की भक्ति करने के मुख्य उद्देश्य से भटक गए हैं। सच्चा संत वही है, जो निष्पक्ष होकर अर्थात् निर्गुण-सगुण के विवाद में न पड़कर केवल प्रभु का भजन करता है।

5. **हिंदू मूआ राम·····निकटि न जाइ।।**

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि हिंदू तो 'राम-राम' की और मुसलमान 'खुदा-खुदा' की रट लगाते-लगाते मर गए, परंतु सच्ची ईश्वर-भक्ति को कोई न समझ सका; अतः इनका जीवन व्यर्थ ही रहा और दोनों में से कोई भी उस ईश्वर (राम अथवा खुदा) को प्राप्त न कर सका। वास्तव में वही व्यक्ति जीवित माना जा सकता है, जो इस प्रकार की भेदभाव की भावना अर्थात् राम अथवा खुदा की दुविधा से दूर रहे और सच्चे मन से एक ईश्वर की भक्ति में मन लगाए तथा मानवता से प्रेम करे।

6. **काबा फिरि कासी·····कबीरा जीम।।**

भावार्थ—कबीर कहते हैं—(जब मैं हिंदू-मुसलमान के भेदभाव से ऊपर उठकर मध्यमार्गी हो गया तो) मेरे लिए मुसलमानों का पवित्र तीर्थस्थल काबा ही काशी हो गया और राम का नाम ही रहीम हो गया। इस प्रकार जिसे मैं मोटा आटा समझकर अखाद्य समझता था, वही मेरे लिए बारीक मैदा जैसा हो गया और अब मैं उसे बैठकर आराम से खा रहा हूँ। आशय यह है कि धार्मिक भेदभाव के नष्ट होने पर मेरे मन में हिंदू-मुसलमान तथा राम-रहीम के नाम पर बसी दुर्भावनाएँ अब दूर हो गई हैं और अब मैं शांतिपूर्वक आराम से प्रभु-भक्ति कर रहा हूँ।

7. **ऊँचे कुल का·····साधू निंदा सोइ।।**

भावार्थ—कबीर कहते हैं—यदि किसी मनुष्य ने उच्चकुल में जन्म लिया है, किंतु उसके कर्म ऊँचे नहीं हैं तो उच्चकुल में जन्म लेने का भी क्या लाभ? सोने का कलश यदि मदिरा से भरा हुआ हो तो साधु लोग ऐसे सुवर्ण कलश की भी निंदा ही करते हैं। आशय है कि मनुष्य कर्म से महान बनता है, जन्म से नहीं।

सबद (पद)

8. **मोको कहाँ ढूँढ़े·····की स्वाँस में।।**

भावार्थ—पद में भगवान (निराकार ब्रह्म) स्वयं मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं—हे मनुष्य! तू मुझे क्यों जहाँ-तहाँ ढूँढ़ता फिर रहा है, तेरा यह भटकना व्यर्थ है। मैं तो तेरे समीप ही हूँ, तेरे पास ही रहता हूँ। मैं न मंदिर में रहता हूँ और न मसजिद में ही रहता हूँ; न मुसलमानों के तीर्थ काबा में रहता हूँ और न ही हिंदुओं के पूज्य कैलाश-पर्वत पर ही रहता हूँ; अतः तू मुझे इन स्थानों पर क्यों खोजता भटक रहा है। न तो मैं किसी कर्मकांड को करने से

ही मिलता हूँ, न योग-साधना, हठयोग आदि से ही मिलता हूँ और न ही संसार से विरक्त होकर संन्यासी बन जाने से ही मिलता हूँ। ये सब तो ऊपरी बातें हैं, दिखावा है। मैं तो सब जगह व्याप्त हूँ। यदि सच्चा जिज्ञासु, खोजने वाला भक्त हो तो मैं उसे तुरंत दर्शन देता हूँ। जिसके मन में मुझे पाने की इच्छा हो, सच्ची ललक हो, उससे तो मैं तुरंत ही मिलता हूँ। ऐ बंदे! सच तो यह है कि मुझे पाने के लिए कर्मकांड, योग-वैराग्य, संन्यास आदि की नहीं, सच्ची लगन की आवश्यकता है। कबीर कहते हैं–हे संतो! यह परमात्मा तो सब प्राणियों में उसी प्रकार विद्यमान है, जैसे शरीर के भीतर साँस विद्यमान है। यह परमात्मा प्राण बनकर तुम्हारे भीतर समाया हुआ है: अतः उसे खोजना है तो अपने अंदर ही खोजो, बाहर नहीं।

9. **संतौ भाई.....तम खीनाँ।।**

भावार्थ–कबीर कहते हैं–हे संत भाइयो! ज्ञान की आँधी आ गई है। उसके आते ही बुद्धि पर पड़ा भ्रम का परदा पूरी तरह हट गया। मायारूपी रस्सी उसे बाँधकर न रख सकी। स्वार्थ और संपत्ति का चिंतन करने वाले चित्त के दोनों स्तंभ गिर पड़े हैं। मोहरूपी बिल्लियाँ टूट गई हैं। तृष्णारूपी छप्पर धरती पर आ गिरा है। कुबुद्धिरूपी बर्तन टूट गया है, नष्ट हो गया है अर्थात् कुबुद्धि का भेद खुल गया है।

ज्ञानी संतों ने अब योग-साधना की युक्तियों से नए छप्पर का निर्माण कर लिया है। यह निर्माण ऐसा मज़बूत है कि उसमें से पानी की एक भी बूँद नहीं टपक सकती। इस प्रकार जब संतों ने प्रभु के रहस्य को जान लिया तो शरीर में बसा हुआ मोह, माया, दुर्भावना, कपट आदि का कूड़ा पूरी तरह निकलकर बाहर हो गया। इस ज्ञान की आँधी के पश्चात् भक्तिरूपी जल की वर्षा हुई, जिसके प्रेम में हरि के सब भक्त सराबोर हो गए। कबीर कहते हैं-इस प्रकार ज्ञानरूपी सूर्य के प्रकट होने पर जो अज्ञानरूपी अंधकार शेष था, वह भी नष्ट हो गया।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।।

1. मानसरोवर से आशय है–
(क) तालाब से (ख) तीर्थ स्थान से
(ग) भक्त के पवित्र हृदय से (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. हंस किसका प्रतीक है–
(क) पक्षी का (ख) महात्मा का
(ग) परमात्मा का (घ) जीवात्मा का।

3. 'अब उड़ि अनत न जाहिं' का आशय है–
(क) उड़कर दूर चले जाना (ख) अब उड़कर कहीं न जाना
(ग) पुनर्जन्म न होना (घ) बार-बार जन्म होना।

4. मुकताफल का क्या अर्थ है–
(क) मोती (ख) मीठा फल
(ग) मुक्तिरूपी फल (घ) कड़वा फल।

5. 'केलि कराहिं' में अलंकार है–
(क) अनुप्रास (ख) यमक
(ग) श्लेष (घ) उपमा।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क)।

(2) हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।।
हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।।

1. कबीर किस पर सवार होने के लिए कहते हैं–
(क) घोड़े पर (ख) रथ पर
(ग) ज्ञानरूपी हाथी पर (घ) इनमें से किसी पर नहीं।

2. कबीर ने संसार की तुलना किससे की है–
(क) बंदर से (ख) कुत्ते से
(ग) बकरी से (घ) गीदड़ से।

3. हिंदू किसके नाम पर मरता है–
(क) कृष्ण के (ख) राम के
(ग) खुदा के (घ) रहीम के।

4. कबीर के अनुसार कौन जीवित है–
(क) जो राम को भजता है
(ख) जो खुदा की इबादत करता है
(ग) जो राम और रहीम दोनों को मानता है
(घ) जो राम और खुद दोनों के चक्कर में नहीं पड़ता।

5. 'भूँकन दे झख मारि' कह कर किसकी उपेक्षा की है–
(क) कुत्ते की (ख) संसार की
(ग) हाथी की (घ) ज्ञान की।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(3) काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।।
ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।।

1. काबा-काशी और राम-रहीम एक कैसे हो गए–
(क) यात्रा करने से (ख) गुरु के उपदेश से
(ग) धार्मिक भेदभाव मिट जाने से (घ) एक साथ रहने से।

2. 'मैदा' किसका प्रतीक है–
(क) आटे का (ख) गेहूँ का
(ग) स्वाद का (घ) सभी धर्मों के सार का।

3. ऊँचे कुल में जन्म लेने से कब लाभ नहीं है–
(क) जब व्यक्ति सुंदर न हो
(ख) जब व्यक्ति की करनी अच्छी न हो
(ग) जब व्यक्ति धनवान न हो
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

4. मदिरा से भरे स्वर्ण-कलश के समान कौन है–
(क) जो सुंदर नहीं है
(ख) जो ज्ञान प्राप्त नहीं करता
(ग) जिनकी करनी अच्छी हैं
(घ) जो उच्च कुल में जन्म लेकर अच्छे कर्म नहीं करता।

5. साधु किसकी निंदा करते हैं–
(क) उच्च कुल वाले की
(ख) नीच कुल वाले की
(ग) सुरा से भरे स्वर्ण-कलश की
(घ) श्रेष्ठ कर्म करने वाले की।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(4) मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

1. ईश्वर को मनुष्य कहाँ ढूँढ़ता है–
(क) मंदिर-मसजिद, काबे कैलास में
(ख) क्रिया-कर्म में
(ग) योग-वैराग्य में
(घ) उपर्युक्त सभी में।

2. कबीर के अनुसार ईश्वर कहाँ हैं–

(क) मंदिर में (ख) तीर्थ स्थान पर
(ग) सब प्राणियों की साँस में (घ) योग और वैराग्य में।

3. ईश्वर किसे मिलते हैं–

(क) जो माला जपता है
(ख) जो सच्चा खोजी है
(ग) जो ईश्वर भक्त होने का ढोंग करता है
(घ) जो ईश्वर को खोजना नहीं चाहता।

4. सच्चे खोजी को ईश्वर कितने समय में मिलते हैं–

(क) पलभर की तलाश में (ख) एक वर्ष में
(ग) कई जन्मों में (घ) मिलते ही नहीं।

5. 'कौने क्रिया-कर्म' में कौन-सा अलंकार है–

(क) यमक (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) अनुप्रास (घ) उपमा।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग)।

(5) संतौं भाई आई ग्यौंन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ौंनी, माया रहै न बाँधी।।
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिरौंनी, मोह बलिडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।
कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ।।

1. कबीर के अनुसार कैसी आँधी आई है–

(क) धन की (ख) मान की
(ग) ज्ञान की (घ) रेत की।

2. ज्ञान की आँधी में क्या उड़ गया–

(क) भ्रम का परदा (ख) छप्पर
(ग) वस्त्र (घ) ये सभी।

3. तृष्णारूपी छप्पर के गिरने से क्या फूट गया–

(क) मिट्टी का घड़ा (ख) काँच का बरतन
(ग) कुबुद्धिरूपी बरतन (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. ईश्वर का रहस्य जान लेने का क्या परिणाम हुआ–

(क) बहुत सारा धन मिल गया
(ख) मोक्ष प्राप्त हो गया
(ग) शरीर का छल-कपटरूपी कूड़ा निकल गया
(घ) शरीर शिथिल हो गया।

5. भानु (सूर्य) किसका प्रतीक है–

(क) प्रकाश का (ख) धूप का
(ग) गरमी का (घ) ज्ञान का।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. कबीर का जन्म स्थान है–

(क) काशी (ख) मथुरा
(ग) अयोध्या (घ) मगहर।

2. कबीरदास के विषय में सत्य है–

(क) वे एक धर्मप्रचारक थे (ख) वे एक संन्यासी थे
(ग) वे सद्गृहस्थ संत थे (घ) वे राजकवि थे।

3. कबीरदास किसके उपासक थे–

(क) सगुण के (ख) निर्गुण के
(ग) सगुण और निर्गुण के (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. कबीरदास के गुरू का नाम था–

(क) सत्यानंद (ख) रामानंद
(ग) ब्रह्मानंद (घ) ईश्वरानंद

5. कबीरदास जी ने ज्ञानी और संत किसे बताया–

(क) जो अपने धर्म संप्रदाय का ख्याल रखता है
(ख) जो सदा ईश्वर भक्ति में लीन रहता है
(ग) जो सरल हृदय से निष्पक्ष होकर संप्रदायों से ऊपर उठकर प्रभु का ध्यान करता है
(घ) जो कठोर साधना में लीन रहता है।

6. मनुष्य कब महान कहलाता है–

(क) जब वह ऊँचे कुल में जन्म लेता है
(ख) जब उसके माँ-बाप धनी होते हैं
(ग) जब वह अपने धर्म संप्रदाय को बढ़ावा देता है
(घ) जब उसके कर्म ऊँचे होते हैं।

7. मानसरोवर में कौन क्रीडा करता है–

(क) बच्चा (ख) हंस
(ग) बगुला (घ) मछली।

8. कबीर को ढूँढ़ने पर भी कौन नहीं मिला–

(क) मित्र (ख) गुरु
(ग) महाजन (घ) प्रेमी।

9. विष भी कब अमृत हो जाता है–

(क) जब उसमें शहद मिल जाता है
(ख) जब उसमें दूध मिल जाता है
(ग) जब प्रेमी से प्रेमी मिल जाता है
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

10. सारा जग किस कारण भूला फिर रहा है–

(क) पक्ष-विपक्ष के कारण (ख) अज्ञानता के कारण
(ग) लालच के कारण (घ) गरीबी के कारण।

11. पलभर की तलाश में ही ईश्वर किसे मिल जाते हैं–

(क) माला जपने वाले को (ख) यज्ञ करने वाले को
(ग) दान करने वाले को (घ) सच्चे खोजी को।

12. 'काबे कैलास' में कौन-सा अलंकार है–

(क) यमक (ख) श्लेष
(ग) अनुप्रास (घ) रूपक।

13. ज्ञान की आँधी आने पर क्या होता है–

(क) मनुष्य का भ्रम दूर हो जाता है
(ख) माया-मोह से छुटकारा मिल जाता है
(ग) मनुष्य की अज्ञानता समाप्त हो जाती है
(घ) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।

14. कबीर ने तृष्णा को क्या बताया है–

(क) बरतन (ख) परदा
(ग) छप्पर (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना किससे की है–

(क) तूफ़ान से (ख) आँधी से
(ग) बाढ़ से (घ) भूकंप से।

उत्तर– 1. (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ग) **6.** (घ) **7.** (ख) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (घ) **12.** (ग) **13.** (घ) **14.** (ग) **15.** (ख)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न
काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : मानसरोवर से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : 'मानसरोवर' से कवि का आशय भक्त के भक्तिभाव से परिपूर्ण हृदय से है।

प्रश्न 2 : इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

उत्तर : इस संसार में सच्चा संत वह है, जो हिंदू-मुसलमान और राम-रहीम आदि भेदभाव में न पड़कर निष्पक्ष होकर ईश्वर का भजन करता है।

प्रश्न 3 : कबीर ने अपने दोहों में किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर : कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है–

(i) व्यक्ति अपने धर्म, मत और इष्टदेव को श्रेष्ठ मानता है तथा दूसरों के धर्म, मत और इष्टदेव की निंदा करता है।

(ii) ऊँचे कुल में जन्म लेकर मनुष्य अपने आपको उच्च या श्रेष्ठ समझने लगता है, भले ही उसके कर्म ऊँचे (श्रेष्ठ) न हों।

प्रश्न 4 : कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर : कवि के अनुसार जो विष को अमृत में बदल देता है अर्थात् अपने मित्र की सभी बुराइयों को अच्छाई में बदल देता है, वही सच्चा प्रेम है।

प्रश्न 5 : कबीर ने कैसे ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर : कबीर ने हाथी जैसे ज्ञान को महत्त्व दिया है। ऐसे ज्ञान को प्राप्त करके मनुष्य संसार की परवाह नहीं करता।

प्रश्न 6 : किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : किसी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से नहीं, उसके स्वयं के कर्मों से होती है। ऊँचे कुल में जन्म लेकर भी यदि व्यक्ति के कर्म श्रेष्ठ नहीं होते तो वह सभ्य और शिष्ट समाज द्वारा उसी प्रकार उपेक्षित और निंदनीय होता है, जैसे मदिरा से भरा स्वर्ण-कलश साधुओं द्वारा उपेक्षित और निंदनीय होता है।

प्रश्न 7 : मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?

उत्तर : मनुष्य ईश्वर को मंदिर-मसजिद, काबा-कैलाश, योग-वैराग्य तथा विभिन्न सांसारिक पूजा-पद्धतियों व कर्मकांडों में ढूँढ़ता फिरता है। कोई मंदिर जाता है अपने देवता को ढूँढ़ने तो कोई मसजिद में जाता है। कोई उसे तीर्थ-स्थलों में खोजता फिरता है। कुछ लोग योग-साधना और संन्यास को अपनाकर उसमें परमात्मा को खोजते फिरते हैं। सब मिलाकर ईश्वर के निवास-स्थान और उसकी प्राप्ति के मार्ग के संबंध में लोगों में अनिश्चय और भ्रम व्याप्त है, इसलिए सब इधर-उधर उसे ढूँढ़ते फिरते हैं।

प्रश्न 8 : कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित-विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर : ईश्वर-प्राप्ति के लिए कबीर ने अपने समय में प्रचलित अनेक विश्वासों का खंडन किया है। उनके आध्यात्मिक ज्ञान के अनुसार ईश्वर न मंदिर में है, न मसजिद में; न काबा में है, न कैलाश-पर्वत पर। वह न कर्मकांड से मिलता है और न योग-साधना करने या वैरागी बन जाने पर मिलता है। कबीर के अनुसार ये सब क्रियाकलाप ईश्वर के सच्चे रूप से नहीं मिलाते; क्योंकि ये ढोंग हैं, दिखावा हैं।

प्रश्न 9 : 'कबीर हिंदू-मुसलिम एकता के प्रचारक थे।' सिद्ध कीजिए।

उत्तर : कबीर हिंदू और मुसलमान दोनों को एक ही ईश्वर की संतान मानते थे। उनका कहना था कि राम और रहीम में कोई भेद नहीं है, जो भेद दिखते हैं, वे सांसारिक हैं; अवास्तविक और व्यर्थ हैं। राम और रहीम के समान ही हिंदुओं और मुसलिमों के तीर्थ-स्थल भी समान आदर के पात्र हैं। काशी हो या काबा, दोनों ही में ईश्वर का निवास है। सच्चा संत इन सांप्रदायिक भेदभावों से परे होता है; अतः सबको मिल-जुलकर प्रेम से रहना चाहिए।

प्रश्न 10 : पाठ्य साखियों और पद के आधार पर कबीर की प्रेम संबंधी दृष्टि पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर : कबीर सांसारिक प्रेम की अपेक्षा प्रभु-प्रेम को अधिक महत्त्व देते हैं। प्रभु-प्रेम व्यक्ति के चित्त को निर्मल करता है। कबीर प्रभु-प्रेम को 'सुभर जल' अर्थात् शुभ्र या उज्ज्वल जल कहते हैं, जिसमें रहने के बाद फिर प्रेमी उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता। कबीर मानते हैं कि प्रभु-प्रेम ऐसा प्रेम है, जिसका एक बार रसपान कर लेने पर सारा विष अमृत में बदल जाता है अर्थात् सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और पुण्यों के सुफल प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 11 : 'खोजी होय' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : कबीर ने 'ईश्वर के सच्चे साधक' को 'खोजी' कहा है। वे मानते हैं कि प्रभु अंध-भक्ति से नहीं मिलते और न ही शास्त्रानुसार कर्मकांड करने और आडंबरों पर आस्था रखने से मिलते हैं। जिस प्रकार खोजी व्यक्ति अंतिम सत्य तक पहुँचने से पहले अनवरत सचेत प्रयास करता रहता है, उसी प्रकार ईश्वर को पाने का भी सचेत प्रयास खोजी भक्त को करना चाहिए, अपने अनुभवों के आधार पर आँखें खोलकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। खोजी साधु वही है, जो प्रभु को पाने के लिए सच्ची तड़प लिए हुए अपने अनुभव के बल पर साधना करने में सदा रत रहता है। खोजी साधु को ही प्रभु का साक्षात्कार होता है।

प्रश्न 12 : 'मैं तो तेरे पास में' कहकर कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर : कबीर ने यहाँ 'मैं' का प्रयोग परमात्मा के लिए किया है। इसमें कबीर यह कहना चाहते हैं कि ईश्वर हर प्राणी के मन में समाया हुआ है। वह प्रतिपल उसकी साँसों की तरह उसके साथ है। आवश्यकता है तो बस उसको पहचानने की।

प्रश्न 13 : कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उत्तर : कबीर ईश्वर को कण-कण में व्याप्त मानते हैं; सभी प्राणियों के प्राणतत्त्व के रूप में मानते हैं। इसलिए उन्होंने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' कहा है।

प्रश्न 14 : कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उत्तर : हम जानते हैं कि सामान्य हवा से तो वस्तुएँ उड़ या हट नहीं पातीं, आँधी ही वस्तुओं को उड़ाने में, हटाने में सक्षम होती है; अतः जब ज्ञान आँधी जैसी गति से आएगा, तभी मन के भ्रम आदि दोष दूर हो सकेंगे, हट सकेंगे। इसीलिए कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से की है।

प्रश्न 15 : ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : ज्ञान की आँधी आने से भक्त के मन के सारे भ्रम और पाप नष्ट हो जाते हैं। माया, मोह, स्वार्थ, धन-लिप्सा, तृष्णा, कुबुद्धि और अन्य मनोविकार नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार उसके मन का वातावरण शुद्ध हो जाता है। शुद्ध मन में भक्ति और ईश्वरीय प्रेम के रस की वर्षा होती है। इस ईश्वरीय भक्ति के रस में भीगकर भक्त के जीवन में आनंद-ही-आनंद छा जाता है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर-विकल्प चुनकर लिखिए–*

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।।
ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।।

1. काबा-काशी और राम-रहीम एक कैसे हो गए–

(क) यात्रा करने से (ख) गुरु के उपदेश से
(ग) धार्मिक भेदभाव मिट जाने से (घ) एक साथ रहने से।

2. 'मैदा' किसका प्रतीक है–

(क) आटे का (ख) गेहूँ का
(ग) स्वाद का (घ) सभी धर्मों के सार का।

3. ऊँचे कुल में जन्म लेने से कब लाभ नहीं है–

(क) जब व्यक्ति सुंदर न हो
(ख) जब व्यक्ति की करनी अच्छी न हो
(ग) जब व्यक्ति धनवान न हो
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

4. मदिरा से भरे स्वर्ण-कलश के समान कौन है–

(क) जो सुंदर नहीं है
(ख) जो ज्ञान प्राप्त नहीं करता
(ग) जिनकी करनी अच्छी हैं
(घ) जो उच्च कुल में जन्म लेकर अच्छे कर्म नहीं करता।

5. साधु किसकी निंदा करते हैं–

(क) उच्च कुल वाले की
(ख) नीच कुल वाले की
(ग) सुरा से भरे स्वर्ण-कलश की
(घ) श्रेष्ठ कर्म करने वाले की।

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. मनुष्य कब महान कहलाता है–

(क) जब वह ऊँचे कुल में जन्म लेता है
(ख) जब उसके माँ-बाप धनी होते हैं
(ग) जब वह अपने धर्म संप्रदाय को बढ़ावा देता है
(घ) जब उसके कर्म ऊँचे होते हैं।

7. कबीर को ढूँढ़ने पर भी कौन नहीं मिला–

(क) मित्र (ख) गुरु
(ग) महाजन (घ) प्रेमी।

8. पलभर की तलाश में ही ईश्वर किसे मिल जाते हैं–

(क) माला जपने वाले को (ख) यज्ञ करने वाले को
(ग) दान करने वाले को (घ) सच्चे खोजी को।

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. कबीर ने कैसे ज्ञान को महत्त्व दिया है?

10. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित-विश्वासों का खंडन किया है?

11. 'खोजी होय' से कवि का क्या अभिप्राय है?

12. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?